Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XIV, Issue No. 1, October-2017, ISSN 2230-7540

छात्रों के लिए शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन

Sita Ram[1]* Dr. Kuldeep Kumar[2]

[1] Research Scholar, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

[2] Professor, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand

सार – *आज के छात्र ही देश के भावी कर्णधार हैं और इनके निर्माण में शिक्षा की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है क्योंकि शिक्षा के बिना कोई भी छात्र समाज में अपना स्थान नहीं बना सकता है। इस सन्दर्भ में शोधकत्र्ता को जिज्ञासा हुई कि वह ज्ञात करे कि छात्रों के अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व आयामों के आधार पर शैक्षिक रूचि, शैक्षिक संतुष्टि एवं शैक्षिक-उपलब्धि किस प्रकार प्रभावित होती है अर्थात् उसकी आवश्यकता बालक की अभिवृत्ति को किस ओर इंगित करता है परन्तु जब यह रुचि शिक्षा के प्रति लक्ष्य बन जाती है तो इसका महत्व बालक के जीवन में उसके व्यक्तित्व के रूप में और अधिक हो जाता है। बालक के अन्दर सार्वभौमिक अभिवृत्तियों वाली शक्तियों का निर्माण हो जाता है। वह अपना स्थान समाज में प्रमुखता से रख पाता है। किसी भी समस्या के तह तक जाने के लिए हमें उसके कारणों एवं महत्वों के विषय में जानना आवश्यक होता है और यह तभी सम्भव है जब हम छात्रों की शैक्षिक रूचि से सम्बन्धित नित्य नई जानकारियाँ प्राप्त करें।*

----------X----------

1. विषय संकेतः

शैक्षिक रुचि, शैक्षिक, निर्देशन को भी प्रभावित करती है। निर्देशन की क्रिया में छात्र को स्वयं की यथेष्ट छवि विकसित करने तथा उसे स्वीकार करने में सहायता मिलती है। फलस्वरूप वह अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह कुशलतापूर्वक करता है और उसे आत्म-संतुष्टि मिलती है और विद्यालय एवं समाज का उपयोगी सदस्य भी बनता है। माध्यमिक स्तर पर छात्र उस स्थिति में होते हैं जहाँ उन्हें उचित मार्ग पर अग्रसर कराया जा सकता है। इस स्तर के बालकों को यदि उचित निर्देशन प्रदान नहीं किया जाता एवं उन्हें रुचियों के अनुसार विषयों के चयन की स्वतन्त्रता के स्थान पर किन्हीं निश्चित विषयों को पढ़ने के लिए बाध्य किया जाता है तो उनकी प्रतिभा का विकास नहीं हो पाता है, तब उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी आशानुकूल नहीं होती है और ऐसे छात्रों की सामाजिक उपयोगिता भी प्रभावित होती है। शैक्षिक दृष्टिकोण से माध्यमिक स्तर क¢ छात्रों की शैक्षिक रुचियों को जानना अति आवश्यक है क्योंकि अरुचिपूर्ण विषयों को बालक, बाध्य किए जाने पर भी सीखने में असमर्थ रहता है। यदि बालक को रुचि के अनुकूल विषय पढ़ने दिया जाए तो वह निःसन्देह उस विषय में विशेष उन्नति करेगा।

2. प्रस्तावना

मनुष्य प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है जब मनुष्य एक छोटे से भ्रूण के रूप में जन्म लेता है और क्रमशः वृद्धि तथा विकास के द्वारा उत्पन्न होकर शिशु, बालक, किशोर, और वयस्क अवस्थाओं में विकसित होकर जीवन यापन करता है तो जीवन के एक-एक क्षण का अनुभव उसके ज्ञान को बढ़ाता है और प्रत्येक घटना से शिक्षा ग्रहण करता है। यह प्रक्रिया जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है अर्थात यह एक सतत प्रक्रिया है जो गर्भाधान से लेकर जीवन के अंत तक चलती रहती है। प्रकृति के प्रत्येक तत्व से हमारे मन में नए-नए विचार जन्म लेते रहते हैं और हम उनके बारे में चिंतन करते हैं इसी का नाम शिक्षा है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में "अ" प्रत्यय लगाने से बना है। शिक्ष् का अर्थ है 'सीखना एवं सिखाना'। समस्त संसार शिक्षा का क्षेत्र और प्रत्येक व्यक्ति बाल, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी शिक्षार्थी हैं। वे सब जीवनपर्यन्त कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। अतः व्यक्ति का सारा जीवन काल उसका शिक्षा काल होता है तथा प्रत्येक व्यक्ति जहाँ स्वयं दूसरे से सीखता है वहाँ दूसरे को भी कुछ न कुछ शिक्षा देता है। शिक्षा ज्ञान रूपी प्रकाश का स्रोत है। जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ-प्रदर्शक है शिक्षा के द्वारा

www.ignited.in

हमारे संशयों का उन्मूलन एवं कठिनाइयों का निवारण होता है तथा विश्व को समझने की क्षमता प्राप्त होती है। "ज्ञान तृतीय मनुजस्य नेत्रं समस्त तत्वार्थ विलोक दक्षम।" अर्थात दो नेत्रों के देखने से जो अपूर्ण रह जाता है वह विद्या रूपी तृतीय नेत्र से देखा जा सकता है। उदाहरण स्वरूप एक वनस्पति विज्ञानी, कवि तथा अनपढ़ तीनों ही फूलों को देखा करते हैं परन्तु तीनों के देखने में अंतर है। बिना विद्या के मनुष्य और पशु में कोई अंतर नहीं। "विद्या विहीन पशु समानः" अर्थात विद्या से ही मानवता के गुणों का विकास संभव है नहीं तो मनुष्य पशु का पशु ही रह जाएगा, जिसका उद्देश्य मात्र उदरपूर्ति होता है।

शिक्षा जीवन का सम्पूर्ण शास्त्र है। शिक्षा सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति का एक सामाजिक साधन है, जिससे समाज अपने ही अस्तित्व को सुनिश्चित करता है। इसका उद्देश्य ज्ञान पिपासा जगाने के साथ व्यक्ति को संस्कारी, विचारवाना और संयमी प्राणी बनाना है। शिक्षा व्यक्ति के जीवन को तार्किक बनाती है, और अच्छे-बुरे की समझ पैदा कर निष्पक्ष निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। इसका उद्देश्य एक स्वस्थ नागरिक का निर्माण करना है, जो अपने दायित्वों का निर्वहन स्वतन्त्र रूप में कर सके। भारत में शिक्षा और ज्ञान के महत्व को प्राचीन काल से ही समझा गया है। भारतीय ऋषि अविद्या एवं अशिक्षा को मृत्यु तुल्य मानते हैं। यही नहीं 'ज्ञानम् तृतीयम् मनुजस्य नेत्रम्' वैदिक कालन से शिक्षा को ही वह प्रकाश माना गया है, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रकाशित करने की सामथ्र्य रखता है। इसलिए विद्वानों ने शिक्षा को तीसरा नेत्र कहा है। शिक्षा वस्तुतः वह प्रक्रिया है, जिससे मनुष्य बेहतर मनुष्य बनता है और अपनी इस दुनिया को और बेहतर दुनिया बनाने का संकल्प और कौशल अर्जित करता है। शिक्षा व्यक्तित्व को सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त महत्वूपर्ण है। शिक्षा से व्यक्ति में आत्मनिर्भरता, आत्मिक ऊर्जा और अपने अस्तित्व का एहसास होता है। शिक्षा के इसी महत्व को स्वीकार कर पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य रखा गया है। यह एक सर्वविदित सत्य है, कि शिक्षा किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के विकास की धुरी होती है। शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ साक्षराता से ही नहीं हैं, बल्कि शिक्षा चेतना और उत्तरदायित्व की भावना को जागृत करने वाला औजार भी है। शिक्षा को एक मापक या पैमाना के तौर पर देखा जाता है, जिसके आधार पर व्यक्ति, राज्य या देश का मूल्यांकन किया जाता है शिक्षा के मामले में प्रारम्भ से ही भारतवर्ष का दुनिया में प्रमुख स्थान रहा है। प्राचीलकाल में भारत को जगद्गुरू की संज्ञा दी गयी थी। नवजात शिशु असहाय तथा असामाजिक होता है। शिक्षा इस शिशु का सर्वांगीण विकास करके उसे अपने जीवन के विभिन्न उत्तरदायित्वों के समुचित ढंग से निर्वाह करने के योग्य बनाती है। विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा को औपचारिक शिक्षा कहते हैं। इस प्रकार औपचारिक शिक्षा कृत्रिम होती है तथा इसके समस्त साधन सीमित होते हैं, ऐसी शिक्षा को प्रदान करने का प्रमुख साधन विद्यालय है। औपचारिक शिक्षा स्कूलों में निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति, निश्चित पाठ्यक्रम को निश्चित पद्धति द्वारा निश्चित समय में दी जाती है। लेकिन प्रश्न उठता है, कि यह किस प्रकार के स्कूलों से प्रारम्भ की जाती है। प्राथमिक विद्यालय इस दिशा में पहला कदम है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों में प्राथमिक शिक्षा विकास के उद्देश्यों में उस मां के समान है जो अंगुली पकड़कर बच्चे को न केवल चलना सीखाती है बल्कि प्रथम बार में उसमें आत्मविश्वास को रोपित करती है। प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में प्राथमिक शिक्षा प्रथम अनिवार्यता की वस्तु है, यह पहली सीढ़ी है जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंचता है। कहा जाता है कि राष्ट्रीय जीवन के साथ जितना घनिष्ठ सम्बन्ध प्राथमिक शिक्षा का है, उतना माध्यमिक शिक्षा या उच्च शिक्षा का नहीं है। प्राथमिक शिक्षा का राष्ट्रीय विचारधारा और चरित्र निर्माण में बहुत योगदान।

3. अध्ययन की आवश्यकता

प्राथमिक विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा से औपचारिक शिक्षा का प्रारम्भ होता है। तथा कहा जाता है, कि प्राथमिक शिक्षा से ही शिक्षा रूपी घर की नीवं रखी जाती है। प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में प्राथमिक शिक्षा प्रथम अनिवार्यता की वस्तु है, यह पहली सीढ़ी है, जिसे सफलतापूर्वक पार करके ही कोई राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंचता है।भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 के अनुसार देश के 14 वर्ष की उम्र के समस्त बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था की गयी है। इस उद्देश्य की प्राप्ति तथा प्राथमिक शिक्षा के लोक व्यापक के लिए शासकीय स्तर पर अनेक विद्यालय खोले गये तथा योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति कर शिक्षा देने की उचित व्यवस्था की गयी है।

4. शोध के विशिष्ट उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व के आधार पर छात्रों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर पर अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व के आधार पर छात्रों की शैक्षिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना।

3. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।

www.ignited.in

4. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्रों के बहिर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन करना।

5. शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में चित्रकूट जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तलुनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। जिसमे शोध के न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों को चुना गया जिनमें से 50 सरकारी एवं 50 गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियो को चुना गया। शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया आंकडों के एकत्रिकण के लिए शोध कर्ता द्वारा स्वयं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रश्नवाली का निमार्ण किया गया। आँकड़ो के विश्लेषण के लिए टी परीक्षण, का प्रयोग किया गया है। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की क्या स्थिति है? इसके विभिन्न उद्देश्यों तदोपरान्त परिकल्पनाओं के आधार पर यह शोधकार्य आगे बढ़ाया गया। शोध विश्लेषण के बाद यह पता लगा कि चित्रकूट जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। चित्रकूट जिले के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में बेहतर है।

प्रस्तुत अध्ययन की शोध परिकल्पना

परिकल्पना का तात्पर्य 'पूर्व चिन्तन' से है, यह अनुसन्धान की प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ है। इसका तात्पर्य यह है कि किसी समस्या के विश्लेषण और परिभाषीकरण के बाद उसमें कारणों तथा कार्य-कारण के सम्बन्ध में पूर्व-चिन्तन कर लिया जाता है। अर्थात इस समस्या का यह कारण हो सकता है यह निश्चय करने के बाद उसका परीक्षण प्रारम्भ हो जाता है अनुसन्धान कार्य इस परिकल्पना के निर्माण और परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है। परिकल्पना किसी भी अनुसन्धान का सर्वप्रथम महत्वपूर्ण स्तर है। किसी नवीन तथ्य की खोज वैज्ञानिक विधि से करने के लिए आवश्यक है। कि सबसे पहले अपने ज्ञान, सूचना तथा अनुभव के आधार पर एक सम्भावित कार्य-कारण स्थिर कर लिया जाए और विषय से सम्बन्धित उचित सामग्री एकत्र करके उसकी परीक्षा की जाए। शोधकर्ता की परिकल्पना पूर्णतया सत्य या आंशिक रूप से सत्य या पूर्ण रूप से निराधार हो सकती है। किन्तु प्रत्येक दशा में उसके द्वारा अनुसन्धान कार्य में आगे बढ़ने में अवश्य सहायता मिलती है। यद्यपि सही परिकल्पना ही, सिद्वान्तों के निर्माण में सहायक होती है। अतः समस्या का उचित रूप से विश्लेषण करके परिकल्पनाओं का निर्माण करना चाहिए।

6. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

इस शोध का उद्देश्य चित्रकूट जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना था। शोधकर्ता ने पूर्व में निर्धारित किये गये उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुसार परीक्षण में प्राप्त आँकड़ों का क्रमवार विश्लेषण किया है, जो कि इस प्रकार है ।

विश्लेषण हेतु प्राप्तांको से मध्यमान एवं मानक विचलन की गणना की गयी। जो निम्न सारणी-4.1 में दिया गया है।

सारणी-4.1 चित्रकूट जिले के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त अंको का मध्यमान एवं मानक विचलन-

क्र.	परीक्षण का नाम	विद्यार्थियों की संख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन	विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों का प्रतिशत	मानक सारणी पर प्राप्त परिणाम
1	सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	50	7.72	3.69	30.88	न्युनतम अधिगम स्तर नही

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है, कि शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण में चित्रकूट जिले के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 7.72 तथा मानक विचलन 3.69 है। यह मध्यमान इस परीक्षण पर प्राप्त अंको के मूल्यांकन मापनी के लिए बनायी गई तालिका के न्यूनतम अधिगम स्तर की नहीं के अन्तर्गत आता है।

अतः कहा जा सकता है कि चित्रकूट जिले के सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि न्यूनतम अधिगम स्तर की नहीं है।

7. निष्कर्ष

औपचारिक शिक्षा का प्रारम्भ प्राथमिक शिक्षा से होता है, शिक्षा की यह पहली सीढ़ी है जिसे सफलता पूर्वक पार करके ही कोई राष्ट्र अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचता है। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कई उन्नयन हुए जिनमें एक है शैक्षिक उपलब्धि। प्रस्तुत शोध में यह देखा गया कि चित्रकूट जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की क्या स्थिति है? इसके विभिन्न उद्देश्यों

www.ignited.in

तदोपरान्त परिकल्पनाओं के आधार पर यह शोधकार्य आगे बढ़ाया गया। आँकड़ों को इकट्ठा करने तथा विश्लेषण करने के दौरान शोधकर्ता के समक्ष कई बातें आयी, विश्लेषण के बाद यह पता लगा कि चित्रकूट जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है। जबकि इन विद्यालयों में पहुँचने के दौरान स्थिति कुछ और ही सामने आयी। विद्यार्थियों में प्रश्न पत्र हल करने की उत्सुकता देखी गई, परन्तु शोधकर्ता ने कई ऐसे बिन्दु देखे जो नकारात्मक थे। प्रश्नावली हल करने की पूर्व शोधकर्ता द्वारा निर्देश देने के बावजूद भी विद्यार्थियों ने कई साधारण त्रुटियाँ की। जैसे-कुछ विद्यार्थियों ने प्रश्नावली के सभी प्रश्नों को हल नहीं किया, यहाँ तक ही एक ही प्रश्न के उत्तर के लिए कई विकल्पों को चुना तथा कई प्रश्नावली पर विद्यार्थियों द्वारा उत्तर लिखा हुआ पाया गया।

गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में ऐसी त्रुटियाँ ज्यादा देखने को मिलीं, परन्तु दोनों विद्यालों के विद्यार्थियों की तुलना करने पर यह ज्ञात हुआ कि 'चित्रकूट जिले के गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में बेहतर है।'' इसका कारण गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का अप्रशिक्षित होते हुए भी परीश्रमी एवं पाठ्य का नियमित शिक्षण एवं अवलोकन करना हो सकता है। इस शोधकर्ता ने शोध के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला कि प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी, मूलभूत सुविधाओं का अभाव, सरकारी नीतियों एवं उनके क्रियान्वयन में व्याप्त उदासीनता, शिक्षा के अतिरिक्त अन्य कार्य को दिया जाना है। जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावति होती है। इस समस्या से बचने के लिए सरकार को प्राथमिक शिक्षा पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

8. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सक्सेना, राधा रानी (2002); ''उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक'', जयपुर: क्लासिक पब्लिकेशन्स।

सिंह, सुरेश (2012); ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'', इलाहाबाद: अनुभव पब्लिसिंग हाउस।

पाठक, आर. पी. (2010); ''आधुनिक भारतीय शिक्षा, समस्याएं एवं समाधान'', नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स।

यादव, वीरेन्द्र सिंह (2013); ''भारतीय शिक्षा का बदलता परिदृश्य: चुनौतियाँ एवं समाधान की दिशाएँ'', नई दिल्ली: ओमेगा पब्लिकेशन्स।

गुप्ता, मंजु (2007); ''आधुनिक शिक्षण प्रतिरूप'', नई दिल्ली: के. एस. के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स

सक्सैना, एन. आर. स्वरूप (2012); ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा'', मेरठ: आर.लाल. बुक डिपो।

सिंह, राजेन्द्रपाल (2011); ''तुलनात्मक शिक्षा के सिद्धान्त'', जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

आर्येन्दु, अखिलेश (2007); प्राथमिक शिक्षा और सरकारी कार्य योजना, कुरूक्षेत्र, वर्ष 30 अंक 11, पृष्ठ 10-12।

बुच, एम.बी.(एडि.1992) सर्वे आॅफ रिसर्च इन एज्यूकेशन, नई दिल्ली: एन.सी.इ.आर.टी.।

गिरी, एम. दत्त (1995); एफेक्ट आंग्जाइटी इन्टेलिजेन्स् एण्ट सोसियो-इकोनॉमिक्स स्टेट्स अन-एकेडमिक एचीवमेन्ट् ऑफ़ प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रेन, पी.एच.टी, थीसिस (अप्रकाशित बी.एच.यूवाराणीसी।

गुप्ता, एस.पी. (2004); उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।

गुप्ता, एस.पी. (2005); भारतीय शिक्षा का इतिहार विकास एवं समस्या, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।

पाण्डेय लाख नारायण (2005) छात्रों एंव अभिावको का अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों के प्रति झुकाव एक अध्ययन, प्राथमिक शिक्षक वर्ष 30 अंक 2, पृष्ठ 24-29।

पाण्डेय बैजनाथ (2007) पूर्ण साक्षरता के लिऐ वरदान मिड डे मिल कार्यक्रम कुरूक्षेत्र, वर्ष 53 अंक 11, पृष्ठ 10-12।

Corresponding Author

Sita Ram*

Research Scholar, Himalayan Garhwal University, Uttarakhand